कैरियर की बात – "उद्योग संचेतना" के साथ

वर्ष 12 – अंक 04
फाल्गुन – 2082 वि.

Udyog Sanchetana means awareness of Industry, Technology, and Startup Opportunities.

Started as a **FREE** Monthly publication in April 2014, it completed 11 years in March 2025.

Available on Udyog Sanchetana page of LinkedIn, and **उद्योग संचेतना** page Facebook, our objective is to reach every student, teacher and parents.

You may like to Support us through the QR code -

For feedback write to -
ispatbharti@gmail.com

इस अंक में -

- जमशेदजी नुसरवानजी टाटा
- तीन अधूरे सपने,
- और बात संकल्प शक्ति की

सम्पादक की कलम से – श्रद्धांजलि जमशेदजी !

उद्यम या उद्योग सिर्फ अपने लिए नहीं होता। समाज के असंख्य लोगों को रोजगार मिलता है। राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि होती है। किसी समस्या का समाधान होता है या कोई उपयोगी उत्पाद का निर्माण।

आज पढ़े लिखे युवाओं के लिए **रोजगार चुनौती** है। नौकरियाँ चाहने वाले कहीं अधिक हैं। इसलिए सरकार ने स्टार्टअप योजना प्रारम्भ की, **मेक इन इंडिया** का नारा दिया और **मैन्युफैक्चरिंग** को प्रोत्साहित किया।

अब एक जमाना था, जब यह सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। देश में अंग्रेजों का शासन था। यहाँ से रॉ मैटीरियल बाहर जाता था, और तैयार उत्पादों का आयात होता था। इसमें कपड़ा भी शामिल था।

ईरान का पुराना नाम फारस (पर्शिया) था, निवासी पारसी कहलाते थे, और अग्नि पूजा करते थे। वहाँ इस्लाम का शासन आया तो स्थानीय निवासियों पर धर्म परिवर्तन का दबाव था। कुछ परिवार देश छोड़कर भारत आये।

गुजरात में **जामनगर** के महाराजा ने उन्हें शरण दी, और एक छोटी सी पारसी कम्युनिटी देश में औद्योगिक क्रान्ति की सूत्रधार बन गई। इन्हीं में से एक नाम है - **जमशेदजी नुसरवानजी टाटा**।

जमशेदजी टाटा का परिवार पारसी पुजारी था। परिवार में कोई उद्यमी नहीं था, हाँ पिता ने मुम्बई जाकर व्यापार करने की शुरुआत की। बेटे ने ग्रेजुएशन किया और पिता के साथ काम में हाथ बटाने लगा।

यहीं से यात्रा शुरू होती है एक उद्यमी की, जिसने इंजीनियरिंग या मैनेजमेंट की पढ़ाई नहीं की थी। वह **स्वतः स्फूर्त स्टार्टअप** बना और **मेक इन इंडिया**, मतलब **स्वदेशी** की अलख जगाई।

तृप्ति ग्रोवर, PhD (AIIMS)
प्रबन्ध सम्पादक

With Best Compliments from-
Liberty Metal & Machines Pvt Ltd
Importers of pre-owned Conventional & CNC Machine Tools. Machines imported are in excellent working condition and can be tested at warehouse in Delhi.

www.libertyusedmachines.com
www.usedmachinesdelhi.com
LIBERTY
Email : info@libertymachines.in
rohit.jain@libertymachines.in
Call us at -09818275782, 09810073282
YouTube Channel - **Libertymachines**

जमशेदजी नुसरवानजी टाटा

क्या आप जानते हैं आज भारत का टाटा उद्योग समूह कितना बड़ा है? देश-विदेश में कहाँ-कहाँ इनके उद्योग हैं, और ये क्या बनाते हैं? भारत के हर छात्र को इसकी जानकारी होनी चाहिए, केवल सामान्य ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि पढ़ लिखकर आप वहाँ काम तलाश सकते हैं, टाटा समूह की कम्पनियों में निवेश कर सकते हैं, और प्रेरणा ले सकते हैं एक व्यक्ति के जीवन से, जिसके परिवार में कोई उद्यमी नहीं था।

हर उद्योग की शुरुआत छोटे से होती है, और ऐसी ही कहानी है जमशेदजी टाटा की। गुजरात के एक छोटे से कस्बे नवसारी में 3 मार्च 1839 को पारसी पुजारियों के परिवार में नुसरवानजी टाटा के घर जमशेदजी का जन्म हुआ। ये माता-पिता की इकलौती संतान थे। नुसरवानजी टाटा परिवार में पहले व्यक्ति थे, जो पुजारी का व्यवसाय छोड़कर व्यवसायी बने। उनका काम ट्रेडिंग और रुपयों के लेन देन तक सीमित था। जमशेदजी 14 वर्ष की उम्र में पिताजी के साथ मुम्बई आ गये और एल्फिंस्टन कॉलेज (Elphinstone College) से 1858 में स्नातक बनने के बाद पूरी तरह पिता के व्यवसाय से जुड़ गये।

अंग्रेजों का शासन था, और 1857 की क्रान्ति को अभी एक वर्ष ही हुआ था। भारत से कच्चा माल निर्यात होता था, और कपड़ा, लोहा आदि तैयार सामान विदेशों से आता था। अंग्रेज नहीं चाहते थे कि भारत में उद्योग लगे, ऐसे समय में जमशेदजी ने 29 वर्ष की आयु में पिता से 21 हजार रुपये लेकर अलग व्यापार करने का मन बनाया। एक वर्ष बाद1869 में मुम्बई के चिंचपोकली इलाके में एक बन्द पड़ी दिवालिया तेल मिल खरीद कर उसे रुई के कारखाने में तब्दील कर दिया तथा नाम रखा - **एलेक्जेंडर मिल**। दो साल बाद उन्होंने इसे अच्छे मुनाफ़े के साथ बेच दिया, और इंग्लैंड जाकर लैंक्शायर इलाके में कॉटन उद्योग के काम, और टेक्नोलॉजी का अध्ययन किया।

विदेश से लौटकर जमशेदजी ने 1874 में टेक्सटाइल मिल लगाने का विचार किया। उस समय मुंबई को टेक्सटाइल नगरी कहा जाता था। प्रबन्ध विज्ञान कहता है, नया उद्योग वहीं लगाओ जहाँ इसका गढ़ हो, लेकिन जमशेदजी ने नागपुर को तीन कारणों से चुना - आसपास कपास का उत्पादन होता था, रेलवे जंक्शन की निकटता, और पानी, बिजली, ईंधन की उपलब्धता।

तीन वर्ष में कारखाना तैयार हुआ और 1 जनवरी 1877 को जब टेक्सटाइल मिल का उद्‌घाटन होना तो उसी दिन ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को भारत की महारानी (Empress) घोषित किया गया और जमशेदजी ने भी वक्त की नजाकत को समझते हुए कारखाने का नाम **एंप्रेस मिल** (Empress Mill) कर दिया।

भारत के सबसे बड़े औद्योगिक घराने की 37 वर्ष की आयु में नींव रखने की यह एक लम्बी साहसिक यात्रा की शुरुआत थी। **एम्प्रेस मिल** से ही कामगार कल्याण (Worker's Welfare) की एक नई पहल शुरू हुई, जो उन दिनों कोई नहीं जानता था। काम के सीमित घंटे, महिला कर्मियों के बच्चों की देखभाल के लिए CRECHE, मतलब पालनाघर या शिशु सदन, स्वास्थ्य सुविधा, वगैरह।

अब यहाँ से जमशेदजी के व्यस्त जीवन की महत्वपूर्ण यात्रा शुरू होती है, जिसमें बहुत लम्बी सोच थी। वर्ष 1880 से लेकर 1904 में जीवन के आखिरी क्षण तक उनके **तीन दूरदर्शिता से भरे सपने** थे - स्टील प्लांट, जलविद्‌युत संयंत्र और एक विश्व-स्तरीय वैज्ञानिक संस्थान की स्थापना करना।

उनके जीते जी ये तीनों सपने फलीभूत नहीं हो पाये, लेकिन जिस **संकल्प शक्ति** से उन्होंने इन का बीजारोपण किया, उसका वैभवशाली स्वरूप आज टाटा उद्योग समूह के रूप में प्रत्यक्ष विद्यमान है। कहाँ तो तीन सपने थे, आज टाटा उद्योग समूह की तीस कम्पनियाँ शेयर बाजार में लिस्टेड हैं।

लौह पुरुष

नई टेक्सटाइल मशीनरी की तलाश में मैनचेस्टर यात्रा के दौरान जमशेदजी को थॉमस कार्लाइल का भाषण सुनने का अवसर मिला, जहाँ से उनके मन में विश्वस्तरीय स्टील प्लांट की परिकल्पना जगी। यह एक बहुत बड़ा प्रकल्प था। जिस औद्योगिक क्रांति ने ब्रिटेन तथा अन्य देशों में विकास की लहर पैदा की, भारत उससे अछूता रह गया था।

सरकारी नीतियाँ, दुर्गम स्थानों पर खोज का प्रयास और कदम-कदम पर रोड़े, हर मोड़ पर रूकावट ही नजर आती थी। इस्पात संयंत्र के प्रकल्प को जिन रास्तों से गुजरना पड़ा, वहाँ साधारण व्यक्ति हार मान लेता, लेकिन जमशेदजी अड़िग रहे। इतना ही नहीं, बहुत से व्यंग्य भी सहने पड़े।

ग्रेट इंडियन पेनिन्सुलर रेलवे के चीफ कमिश्नर **सर फ्रेडरिक अपकोट** ने मजाक किया था कि "टाटा जितना रेल स्टील बनाएगा, वह खप जाएगा"। उसे उम्मीद नहीं थी जमशेदजी स्टील प्लांट बनाने में सफल होंगे। लेकिन जब 1912 में जमशेदजी की मृत्यु के बाद स्टील प्लांट में पहली पिंडी (Ingot) रोल की गई तो सर फ्रेडरिक का कहीं अता पता नहीं था। परन्तु जमशेदजी की आत्मा वहाँ जरूर थी, बेटे दोराब तथा चचेरे भाई आर. डी. टाटा के साथ, जिनके अथक प्रयास ने **असंभव को संभव कर दिया था**।

उद्योग का निर्माण सिर्फ ईंट पत्थर से नहीं होता। कामगार कल्याण की पहल एम्प्रेस मिल से हो गई थी। जमशेदजी ने काम के घंटे कम किये, कार्यस्थल को हवादार बनवाया, भविष्य निधि व ग्रेच्युटी को लागू किया जो पश्चिमी देशों में भी तब जरूरी नहीं थी। स्टील प्लांट में कामगारों के लिए टाउनशिप की जरुरत और उसकी रुपरेखा जमशेदजी ने 1902 में ही दोराब टाटा को लिखे पत्र में व्यक्त कर दी थी। जब स्टील प्लांट के लिए स्थान का भी चयन नहीं हुआ था - "खुली सड़कें, छायादार पेड़, बगीचों के लिए काफी जगह, फुटबाल व हॉकी के लिए खेल के मैदान होने चाहिए " - इस सोच को जहाँ मूर्त रूप मिला, उसे **जमशेदपुर** कहना सच्ची श्रद्धांजलि है एक राष्ट्रभक्त, भविष्यद्रष्टा और उद्योग रत्न के लिए।

प्रतिभा पोषण

देश को गरीबी से छुटकारा दिलाने के लिए बुद्धिमान मस्तिष्कों के मार्गदर्शन व पोषण की आवश्यकता को देखते हुए सन् 1892 में ही जे. एन. टाटा अक्षय निधि (एंडोमेंट फण्ड) की स्थापना हो गई थी, जिसके माध्यम से से इंग्लैंड में शिक्षा के लिए टाटा छात्रवृत्ति प्रारम्भ हुई और इसी का परिणाम था की वर्ष 1924 तक भारत की प्रशासनिक सेवाओं में चयनित हर 5 में 2 अभ्यर्थी टाटा स्कॉलर होते थे।

इसी स्रोत से इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस की स्थापना का विचार उपजा, लेकिन जैसा स्टील प्लान्ट के साथ हुआ, जमशेदजी की तमन्ना उनके जीवनकाल में पूर्ण न हो सकी। इसके लिए उन्होंने रूपरेखा बनाकर अपनी व्यक्तिगत पूंजी से 30 लाख रूपये देने का संकल्प कर लिया और तत्कालीन वाइसराय लार्ड कर्जन से लेकर स्वामी विवेकानंद तक से सहयोग का आग्रह किया था।

इस सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द ने 1899 में लिखा था - "मुझे लगता है भारत में एक सामयिक आवश्यकता के प्रकल्प का प्रादुर्भाव हो रहा है जिसके दूरगामी परिणाम होंगें.....योजना न केवल राष्ट्रहित के परिप्रेक्ष्य में कमजोर कड़ियों पर प्रहार है बल्कि इसमें स्पष्ट दूरदर्शिता और मजबूत पकड़ भी है।"

ऐसे समर्थन के बाद भी सोचना मुश्किल था कि बेंगलुरु में भव्य इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस को आने में 12 वर्ष लग जायेंगें। आखिर सन् 1911 में संस्थान ने कार्य प्रारम्भ किया।

हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रकल्प में अपेक्षाकृत कम अवरोध आये, किन्तु इसका लोकार्पण भी जमशेदजी के जीवन काल में न हो सका। फ्रैंक हैर्रिस ने जमशेदजी की आत्मकथा लिखते हुए कहा- **"यह वो व्यक्ति था जिसका काम उसके जाने के बाद भी जीवन्त है और धारणा तथा परिपक्वता के बीच लकीर खींचना असंभव है। उनको स्मरण करते समय अहसास होता है कि एक मृत व्यक्ति कैसे जीवित प्राणियों में प्रेरणा का संचार कर रहा है। "**

मुंबई का **होटल ताज महल** वह प्रकल्प था जो जमशेदजी के जीते जी पूरा हो गया, लेकिन इसका विचार कैसे आया? नगर के एक प्रतिष्ठित होटल में उन्हें प्रवेश से रोका गया, क्योंकि वे भारतीय थे। बस स्वाभिमान की आग ने जमशेदजी को होटल बनाने के लिए मजबूर कर दिया। उनके पुत्र, मित्र और व्यापार सहयोगी, सभी को इस में संशय नजर आता था और बहनों ने तो मजाक भी किया था कि "क्या तुम भोजनालय खोल रहे हो"।

इन सब के बीच चार करोड़ इक्कीस लाख रुपये की लागत से 1903 में तैयार होटल विलासिता का अद्भुत नमूना था। मुंबई का यह पहला भवन था जिसमें बिजली थी, अमेरिका में बने पंखे, जर्मनी की लिफ्ट, तुर्की के स्नानागार (टर्किश बाथ), और अंग्रेज वेटर थे।

अमेरिकी लेखक लेविस एच. लफाम के शब्दों में - पृथ्वी, जल, वायु की ही तरह धन भी आग है या एक तत्व। मनुष्य इसका उपयोग एक औजार (टूल) की तरह कर सकता है या ईश्वर का अवतार मानकर इसके इर्द-गिर्द नाचता रहे। जमशेदजी ने इस सम्पदा का उपयोग भारत व भारतवासियों के जीवन को संपन्न और समृद्ध बनाने में किया। स्वतंत्रता संग्राम में विदेशी वस्त्रों की होली जलाना स्वतन्त्रता आंदोलन का एक भाग था, किन्तु नष्ट करने की अपेक्षा निर्माण करना बड़ा कठिन काम है, और वह भी विपरीत परिस्थिति में, जब विदेशी शासन हो।

स्वदेशी के पितामह

वस्त्र उद्योग से स्वदेशी की नींव रखने वाले जमशेदजी द्वारा लगाया गया वट वृक्ष आज साधारण नमक से लेकर आधुनिक रक्षा उपकरणों के स्वदेशीकरण में संलग्न है। टाटा समूह आज भारत का एक प्रमुख वैश्विक व्यापारिक (MNC) संगठन है, जिसका विश्व के सौ से अधिक देशों में कारोबार है।

सूचना प्राद्योगिकी, इस्पात, मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक चिप, मोटर वाहन, हवाई जहाज के पुर्जे तथा पूरी बॉडी के साथ फ्रांस के रफाल फाइटर जेट के स्वदेशी निर्माण में भी इसकी भूमिका रहेगी। वित्त वर्ष 2024-25 में समूह का

कुल वार्षिक कारोबार 180 बिलियन अमेरिकी डॉलर (लगभग 16,50,334 करोड़ रुपये) से अधिक रहा, जो इसे भारत के सबसे बड़े और सबसे विविध समूहों में से एक बनाता है।

टाटा समूह के मुख्य उद्योग और उपक्रम :

- **एयरोस्पेस और डिफेंस: टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स (Tata Advanced Systems) l**
- **ऑटोमोटिव: टाटा मोटर्स (Tata Motors) l**
- **कंज्यूमर और रिटेल: टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स, बिग बास्केट (BigBasket), टाइटन (Titan) l**
- **स्टील और सामग्री: टाटा स्टील (Tata Steel) l**
- **सूचना प्रौद्योगिकी (IT): टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS) l**
- **वित्तीय सेवाएं: टाटा कैपिटल (Tata Capital) l**
- **ऊर्जा और पावर: टाटा पावर (Tata Power) l**
- **इंफ्रास्ट्रक्चर और कंस्ट्रक्शन: टाटा प्रोजेक्ट्स (Tata Projects) l**
- **टेलीकॉम और मीडिया: टाटा कम्युनिकेशंस (Tata Communications) l**
- **पर्यटन और आतिथ्य: इंडियन होटल्स (Indian Hotels) l**

वर्ष 1943 - हावड़ा ब्रिज

बहुत से लोग नहीं जानते होंगे कि कोलकाता महानगर में हुगली (गंगा) नदी पर बना हावड़ा ब्रिज टाटा स्टील के भारतीय इस्पात से भारतीयों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप अभिकल्पित तथा भारतीय उद्योग द्वारा विनिर्मित पुल, मेक-इन-इंडिया का केवल प्रतीक ही नहीं, प्रेरणा स्रोत है। यह पुल 2018 में 75 वर्ष पूरे कर चुका है। वर्ष 1943 में 3 फरवरी इतिहास का वह स्वर्णिम दिन था, जब द्वितीय विश्व युद्ध के कारण बिना किसी भव्य आयोजन के हावड़ा ब्रिज का लोकार्पण किया गया था।

स्वास्थ्य सेवा

जमशेदजी ने स्वास्थ्य सेवा को भी व्यापार का अभिन्न अंग माना। इसकी झलक कोविड - 19 महामारी काल में परिलक्षित हो रही थी। बात 1896 की है, जब मुंबई में प्लेग महामारी का प्रकोप हुआ। यूक्रेन के युवा डॉक्टर प्रोफेसर हाफकिन ने ग्रांट मेडिकल कॉलेज के बरामदे में जैसी-तैसी प्रयोगशाला बनाकर 1897 में टीका विकसित किया तो जमशेदजी ने न केवल उसे प्रोत्साहित किया उन्होंने अपने स्टाफ, मित्रों व परिवार सहित स्वयं टीका लगवाकर समाज से भय और वहम दूर करने का काम किया।

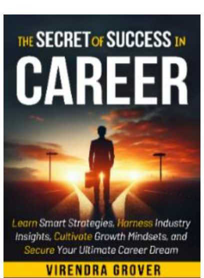

Order this book online at – https://secret-success-career/

Connect author on LinkedIn and Facebook at following LINKS : -

https://www.linkedin.com/in/virendra-grover-889a3a27/
https://www.facebook.com/virendra.grover.9/

सम्पादन सहयोग - अनुभूति सचदेवा, ईशान चोपड़ा